।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।।
(सामवेद 1338)
प्रभु उसका मित्र बनता है जो अपने हृदय में ईश्वर रूप अग्नि को प्रदीप्त कर लेते हैं और अपने हृदयासनों को उसके लिए बिछाए रखते हैं।

वर्ष 36, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 जनवरी, 2013 से 20 जनवरी, 2013
विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188
सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 8 तक

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक कुम्भ प्रयाग में

वैदिक धर्म प्रचार का शंखनाद

प्रचार शिविर उद्घाटन एवं विशाल शोभायात्रा 25 जनवरी को

'विचार टीवी' के माध्यम से प्रदर्शित किए जाएंगे नैतिक शिक्षा एवं वैदिक धर्म पर आधारित चलचित्र

आशीर्वाद
आचार्य बलदेव जी (प्रधान, सार्वदेशिक सभा)

मुख्य अतिथि
महाशय धर्मपाल (चेयरमैन, एम.डी.एच.)

अध्यक्षता
श्री सुरेन्द्र आर्य जी (चेयरमैन, विचार टीवी)

गरिमामयी उपस्थिति
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी (उप प्रधान, सार्वदेशिक सभा)
श्री प्रकाश आर्य जी (मन्त्री, सार्वदेशिक सभा)
ब्र. राजसिंह आर्य जी (प्रधान, दिल्ली सभा)
श्री धर्मपाल आर्य जी (मन्त्री, आर्ष सा.प्रचार ट्रस्ट)

साहित्य, संस्कृति और धर्म की त्रिवेणी तीर्थराज प्रयाग में महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराकर तत्कालीन धर्म, अध्यात्म और कर्मकाण्ड के नाम पर हो रहे पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों और कुप्रवृतियों को जड़मूल से समाप्त करने के लिए वीड़ा उठाया था। तब से लेकर अब तक आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रचार करता आ रहा है। प्रयाग में लगने वाला यह महाकुम्भ प्रत्येक दृष्टि से विश्व में लगने वाले किसी भी मेले से वृहद है। इसमें हिन्दू सनातनी सम्प्रदायों के लाखों सन्त, महन्त और गुरु आकर अपने मत का प्रचार ही नहीं करते हैं बल्कि आर्य समाज भी वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अपना शिविर लगाता रहा है। इस वर्ष भी आर्य समाज की ओर से कई स्थानों पर शिविर लगाया गया है। इसमें विचार टीवी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी साहित्य और चलचित्रों के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। प्रचार शिविर का पता– प्रथम नैतिक फिल्मोत्सव, महाकुम्भ क्षेत्र सेक्टर –6, नागवासुकी, बक्सी बाँध, इलाहाबाद (उ.प्र.) है। विश्वभर के आर्यजन, आर्यसमाजें और आर्य प्रतिनिधि सभाएँ कुम्भ मेले में प्रचार–प्रसार की दृष्टि से दिल्ली सभा कार्यालय, 15 हनुमान रोड नई दिल्ली पर अपना साहित्य भेजकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में सहयोगी बनें।

कुम्भ मेले में प्रचार के विशेष आकर्षण

वेद एवं वैदिक धर्म की विशेष प्रदर्शनी

निःशुल्क वैदिक साहित्य का वितरण

वेद, सत्यार्थ-प्रकाश एवं वैदिक साहित्य विक्रय व्यवस्था

समस्त आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर सहयोग एवं कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में महाकुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

साहित्य, धर्म व संस्कृति की त्रिवेणी कहे जाने वाले तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुम्भ 2013 के शुभ अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु शिविर का आयोजन किया गया है। जो आर्यजन महाकुम्भ मेले में भ्रमरार्थ जाना चाहते हैं वे प्रचार शिविर के स्थान महाकुम्भ मेले के सेक्टर संख्या.9, प्लाट संख्या 66, पश्चिम पटरी, मुक्तिमार्ग एवं सै. 14, अरैल क्षेत्र, संकट मोचन, वल्लभाचार्य मार्ग, मोबाईल टावर के पीछे पहुँचकर लाभ अर्जित कर सकते हैं। पहुँचने के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। मेले की तिथि 13 जनवरी से 25 फरवरी 2013 है। – *सन्तोष कुमार शास्त्री, 9919020017, आर्यसमाज कृष्णनगर, कीडगंज, जिला – इलाहाबाद (उ0प्र0) Email : rajok51@rediffmail.com वैबसाइट : www.vedic-concepts.com*

सम्पादकीय

देश, समाज, संस्कृति के लिए विकट चुनौतियाँ और 'ओवैसी प्रकरण' से उठते सवाल

किसी ने कहा है–वे कौमें बहुत दिनों तक ज़िन्दा नही रहतीं जिन्हें अपनी संस्कृति, धर्म और पूर्वजों पर गर्व नहीं होता है। आज हमारे सामने एक बड़ी चुनौती खुद अपने आप से है, हम अपनी संस्कृति, धर्म और जाति के गौरव को भुलाकर उस भेड़चाल में सम्मिलित हो गए हैं जिनका न तो कोई गौरव होता है और न तो कोई इतिहास ही। आज हिन्दुओं में न तो अपने गौरव, स्वाभिमान और स्वर्णिम इतिहास पर गर्व रह गया है और न तो स्वधर्म, स्व–संस्कृति और सभ्यता पर ही। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है। आज हमारी स्थिति यह हो गई है, आर्य(हिन्दू) जाति के ही गौरव नहीं बल्कि विश्व के गौरव मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगीराज श्री कृष्णचन्द्र और अन्य वैदिक संस्कृति और वैदिक धर्म रक्षक महान योद्धाओं के चरित्र पर कोई भी कीचड़ उछाल देता है और हम चुपचाप सुन–सह लेते हैं। हम कोई बहाना बनाकर मानवता और वैदिक धर्म के दोषी अराजक तत्त्वों को भले ही अनसुना कर दें, लेकिन यह हमारी जीवन्तता और इतिहास–चेतना के लिए बेहद हानिकारक है। हम यह कह सकते हैं कि इन अराजक तत्त्वों का इस प्रकार से दुर्भावना पूर्ण और धृष्टतापूर्ण अमानवीय और अनैतिकता के साथ बोलना आकाश पर थूकने जैसा है, लेकिन इस बात को हम कैसे अस्वीकार कर सकते हैं कि अन्धेरे को निरन्तर आगे बढ़ने की छूट देना अपने अस्तित्व के प्रति लापरवाह होने जैसा है। और यह लापरवाही हमारी जातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना को समाप्त करने का ही एक सबसे बड़ा कारण हो सकती है।

आज हिन्दू अनेक मत, पन्थों, सम्प्रदायों, उप–जातियों और वर्गों में बटा है। इतनी विभिन्नता है कि इसे एकता के सूत्र में बाँधना असम्भव दिखता है। और विडम्बना यह है कि वह इसे 'अनेकता में एकता' के निरर्थक मुहावरों में पिरोकर खुश हो लेती है। यदि शायर के शब्दों में कहा जाय तो 'दिल को बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है' में अपनी सफलता तलाशने लगी है। दर्शन की भाषा में यह 'बालू में तेल' निकालने का कार्य करने लगी है। कहने को तो यह महाराणा, शिवा, हकीकत राय, बन्दा बैरागी, दयानन्द व श्रद्धानन्द के पथवाहक कहते फिरती है, लेकिन हकीकत इसके ठीक विपरीत है। हमारे अन्दर अपने महान पूर्वजों और युगचेता धर्म–संस्कृति रक्षक–योद्धाओं के प्रति न तो सदभावना रह गई है और न तो उनके महान चरित्र का ही अनुसरण करते हैं। कहने को तो हम ईश्वर और धर्म को मानने वाले हैं लेकिन न तो हमें ईश्वर की समझ है और न तो वैदिक (मानव) धर्म का ही। ध्यान देने योग्य बात है कि, जिस जाति के लोगों को सच्चे ईश्वर और सच्चे धर्म की समझ नहीं

– शेष पृष्ठ 3 पर

वेद-स्वाध्याय

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ : जगत् की प्रवाहिका संवाहिका है – नारी बन्दनीया-अभिनन्दनीया

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।। ऋ0 8/33/ 19

अर्थ– हे नारि ! आप (**अधः पश्यस्व**) नीचे देखिए (**मा उपरि**) ऊपर नहीं (**पादकौ**) दोनों पैर (**सन्तराम् हर**) सम्भल कर चलिए (**मा ते कशप्लकौ दृशन्**) आप के अङ्ग–प्रत्यङ्ग दीखने न पायें क्योंकि (**स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ**) तुम जगज्जननी हो। इस गृहस्थ यज्ञ की तुम ब्रह्मा हो।

वैदिक संस्कृति में नारी का सर्वोच्च स्थान है। वेद ने स्त्री को घर की पगड़ी बतलाते हुये कहा है–

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।। यजुः 38.3।।

हे स्त्रि! आप घर की बागडोर हैं, नित्य विज्ञान को देने वाली हैं। आप घर की पगड़ी हैं। भूमि के सदृश पोषण करने वाली हैं सो इस गृहस्थ यज्ञ में सहयोग करें।

प्रस्तुत मन्त्र में स्त्री पर जो अनेक प्रतिबन्ध लगाये हैं उनके पीछे अनेक कारण हैं। **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते** कह कर मनु महाराज भी इनकी सुरक्षा करने पर बल दे रहे हैं–

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च। स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन हि रक्षित।। मनु0 9.7।।

पुरुष प्रयत्नपूर्वक अपनी पत्नी की कुसंगति से रक्षा करता अपनी सन्तान, चरित्र, कुल, अपनी स्वयं और अपने धर्म की रक्षा करता है। स्त्री कुसंग में पड़ जाने से सब कुछ बिगड़ जाता है।

यादृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम्। तस्मात् प्रजा विशुद्धयर्थं स्त्रियं रक्षेत् प्रयत्नतः।। मनु0 9.9।।

स्त्री जैसे पति का सेवन करती है, उसी प्रकार की सन्तान को उत्पन्न करती है। इसलिये सन्तान की शुद्धि के लिये प्रयत्नपूर्वक स्त्री का कुसंग से रक्षा करे। परन्तु यह भी ध्यान रखना है कि स्त्रियों की रक्षा उन्हें परदे में रखकर अथवा बल का प्रयोग करने से नहीं हो सकती। यहाँ मनोविज्ञान से काम लेना होगा। निम्न उपायों से उनकी रक्षा की जा सकती है–

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत्। शौचे धर्मेऽन्नपक्त्यां च परिणाह्यस्य वेक्षणे।। मनु0 9.11।।

पति, अपनी स्त्री को धन को सम्भाल कर रखने और उसके व्यय करने में लगाए। घर एवं घर के समान, वस्त्रादि की शुद्धि, धर्म सम्बन्धी कार्य–अग्निहोत्र, सन्ध्या, स्वाध्याय, भोजन बनाना और घर की सभी वस्तुओं की देखभाल की जिम्मेदारी देनी चाहिये।

पिता–माता, पति द्वारा सुरक्षित स्त्रियाँ भी असुरक्षित हैं। वहाँ पर भी बुराइयों से बच नहीं पातीं। जो स्त्री अपने आचार–विचार की स्वयं सुरक्षा करती है, समझो वही सुरक्षित है। वेद इसी धर्म की शिक्षा दे रहा है–**अधः पश्यस्व मोपरि** हे नारी तू नीचा देखते हुये चल अर्थात् विनम्रता का व्यवहार कर उदण्ड या निर्लज्ज नहीं बन। **पादौ संतरौहर** देखना कहीं तुम्हारे पैर किसी गलत कार्य की ओर नहीं फिसल जायें, जिसका परिणाम तुम्हारे जीवन को बर्बाद न कर दे। इसलिये जो भी कार्य करना है, उसे खूब सोच विचार कर कुल की मर्यादा का ध्यान रखते हुये करना। ध्यान रहे ये छः कार्य स्त्रियों को पतन की ओर ले जाने वाले हैं–

पानं दुर्जन संसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्। स्वप्नोऽन्गेहवासश्च नारीणां संदूषणानि षट्।। मनु. 9.13।।

मादक पदार्थों का सेवन, मद्यपान, दुष्ट पुरुषों का संग, पति वियोग, अकेली जहाँ–तहाँ व्यर्थ पाखण्डी आदि के दर्शन–मिस से फिरती रहना और पराये घर जा के शयन करना या निवास, ये छः स्त्री को दूषित करने वाले दुर्गुण हैं।

नारी पूज्य है, वह प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। आज व्यापारियों ने उसे उपभोक्ता सामग्री बना दिया है। जहाँ देखो वहीं अर्धनग्न स्त्रियों के चित्र दृष्टिगत होते हैं। वेद चेतावनी देता है **मा ते कशप्लकौ दृशन्** तुम्हारे अङ्ग–प्रत्यङ्ग दीखने न पायें। क्यों कि **स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** नारी आप जगज्जननी हैं। घर की ब्रह्मा हैं। राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी, शंकराचार्य, दयानन्द प्रभृति महामानव आप ही के कोख से उत्पन्न हुये हैं।

राष्ट्र की जो सबसे महत्त्वपूर्ण निर्माणी, फैक्टरी या कार्यशाला होती है, वहाँ उतना ही कड़ा पहरा होता है। राष्ट्र में सबसे विशिष्ट स्थान वहाँ के नागरिकों का होता है। वहाँ के युवक–युवतियाँ जो राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी के समान हैं, बिगड़ गये तो उस राष्ट्र का पतन निश्चित समझो। हे देवी ! आप चाहें तो साक्षात् दुर्गा की प्रतिमा बन अत्याचार के विरुद्ध सिंहनाद कर सकती हैं। आप की गोद में खेलते ये सिंहशावक शत्रु के दाँत खट्टे कर सकते हैं। आप ही ने देश–धर्म पर बलिदान होने वाले वीर पुत्रों को जन्म दिया है। आप के पतिव्रत धर्म के सम्मुख बड़े–बड़े आततायी भी नहीं टिक पाए। कहीं माता, कहीं भगिनी, पुत्री और कहीं पत्नी बन आप न जाने कितने जनों को सहारा दिया है। आप की महिमा का वेद शास्त्र, ऋषि–मुनि सब गुणगान करते हैं।

इसलिये माता सीता, द्रोपदी, सावित्री, रुक्मिणी, मैत्रेयी, मन्दालसा, जीजाबाई आदि के धर्म को स्मरण करती हुई यदि फिर से मर्यादाओं का पालन करने का संकल्प ग्रहण करो तो यह भारत–भूमि फिर से वीरों की हुंकारों से गुंजायमान हो जाये। जिसे सुन शत्रु अपने घरों में दुबक जायेंगे। आज आप के त्याग और बलिदान को लोग भुलाते जा रहे हैं। पश्चिम की चकाचौंध से भ्रमित आप की सन्तति कुमार्गगामी बन गई है। ऐसी विकट स्थिति में आप के दृढ़ निश्चय से ही मानव जाति का उद्धार हो सकेगा। आप अपने स्वरूप को पहचानिए। परमात्मा ने आप को पुरुषों से पृथक् अनेक गुण दिए हैं। जिनका उपयोग कर आप चाहे तो संसार का सन्मार्ग दिखा सकती हैं।

– क्रमशः

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद-विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक का यह दसवाँ भाग है। महर्षि के 'अवदान' से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है-अखिलेश आर्येन्दु

SWAMI DAYANANDA SARASWATI

CLEANSE THE HEART WITH NOBLE THINKING. MAN'S DESTINY IS CRADLED IN HIS WILL AND THOUGHT CAN CONTROL THE WORLD

Thought is mighty when it firmly stays
Like focust ray not from its centre strays.
It can control the world for good or ill,
Man's destiny is cradled in his will
And outward scenes, or well or poorly wrought.
Are but the outcome of the inner thought,
Thought Creates, its force is thinking,
Thought creates, its force is mighty,
Rise in holy aspirations,
Read not books that will defile you
See not plays, the mind polluting."
"Behold nature in her beauty.
Glorious sunsets, purple inged,
Darksome sky with slender crescent.
See the night's bright children twinkle,
And the clouds in flowing masses,
The blue, broad and winding river,
Sending its gay ripples sea-ward,
Ah, behold the dreaming homesteads
Waving palms and grating cattle,
These will fill your minds with beauty,
And from gentle nature raise you,
Unto God who dwells in nature"
"Listen not to words of slander,
Listen not to low bred language,
Cultivate words pure and gentle,
Listen to the song of nature,
When through swaying branches soughing,
The soft night wind whispers prayers,
Hear all nature singing glory,
Birds and blossoms, clouds in ether
Sing in prayer and in worship.
Sing with these, you souls exulting,"
Shun strong drinks and pungent spices.
Live a life of simple habits.
Thus will you gain health and vigour
"But withal look ever inward,
See the God within, and hear Him
In humility and worship.
Earnest prayers, holy mantras,
Spoken with firm concentration,
Will exalt both mind and body,
Will build up a noble manhood."

- इसका हिन्दी कव्यानुवाद अगले अंक में

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश, समाज, संस्कृति ....

होती है वे कभी अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति का ध्वजवाहक नहीं बन सकते हैं। आज सारी हिन्दू जाति अनेक मत–मतान्तरों में इस प्रकार से भटक रही है कि गिरा सा गिरा 'म्लेच्छ' भी हमारी चेतना और गौरव को चुनौती देने के लिए अपनी भुजाएँ फड़काता हुआ, हमें समाप्त कर देने की धमकी देता है। और हम यह भूल जाते हैं कि 'म्लेच्छों' ने हमें सैकड़ों वर्षो तक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े रखा। फिर भी हम आजतक अपनी जीवन्तता और संचेतना से रहित बने हुए हैं। सोचो, धर्म और जातिवीर राणाप्रताप, वीर हकीकतराय और बन्दा बैरागी ने किस प्रकार से 'म्लेच्छों' की चुनौती स्वीकार इनको आर्य चेतना का गौरवमयी परिचय दिया था।

भारत वह देश है, जिसकी पहचान वेद, वेदांग, उपनिषद्, गीता, रामायण और पुराणों से प्राप्त होती है। यहाँ कुरान 12वीं शताब्दी में विदेशी आक्रमणकारी मुसलमानों के साथ आया। वैदिक वांगमय करोड़ों वर्षो से केवल भारत को ही नहीं बल्कि विश्व को मानवता, धर्म, संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से **मानव को सही अर्थो में मानव** बनाने का सन्देश देता आया है। नई पीढ़ी को इस गौरव को बताने की आवश्यकता है, वरना देश और भारतीय समाज में विष घोलने वाले अराजक तत्त्व भारत के मूल निवासी आर्यो(हिन्दुओं) को ललकारते रहेंगे। इस लेख में मैं जिस विशेष प्रकरण पर चर्चा करने के लिए अतीत पर कुछ प्रकाश डालते हुए अपनी बात कहने जा रहा हूँ, उसे हर एक आर्यबन्धु को बहुत ही गम्भीरता से समझने की आवश्यकता है।

देश, संस्कृति और समाज की चुनौती देता 'ओवैसी ब्राण्ड' –

जाकिर नाइक और अकबरुद्दीन ओवैसी ' के ताजातरीन भाषाणों को आप सुने और बिना क्रोधित हुए चिन्तन करें। फिर सोचिए, देश, भारतीय समाज(हिन्दू समाज) और संस्कृति की अद्यतन स्थिति पर। और फिर सोचिए, किस प्रकार से **धर्म निरपेक्षता के नाम** पर कुछ विशेष वर्गो और जातियों को किस प्रकार से तुष्टिकरण करके उन्हें कुछ भी करने और कहने की खुली छूट मिली हुई है। हैदराबाद का अकबरुद्दीन ओबैसी आन्ध्र प्रदेश की एक सांसद वाली पार्टी 'मजलिस–ए–इत्तेहाद मुस्लमीन' का 42 वर्षीय विधायक है। इसका बड़ा भाई असदुद्दीन ओबैसी इसी पार्टी का सांसद है। एकदम नया प्रकरण 'अकबरुद्दीन ओवैसी' से ही सम्बन्धित है, जिसमें वह एक सार्वजनिक सभा में खुलकर वह खुद को भारत से अलग करते हुए पूछ रहा है–ऐ हिन्दुस्तान! मैं तुझसे पूछता हूँ. .....। फिर भीड़ से ताली बजवाकर पूछता है– बताओ, दुनिया का मुसलमान हमारा भाई हैं कि नहीं? भीड़ से आवाज आती है–हाँ है। फिर मुट्ठियाँ भींचते हुए कहता है–मुसलमान ही हमारा भाई है । हमें काफिरों यानी हिन्दुओं (दुश्मनों) से निपटना है। इसी भाषण में फिर वह विष उगलता है–हमारे सामने यह माईक है। अल्हा की कसम, यदि इसकी जगह कुछ और थमा दो तो इतिहास में खून'खराबे का एक और दौर चल जाएगा।' यह उस भारत देश में हो रहा है जहाँ के संविधान में मजहब के नाम पर घृणा(नफरत) फैलाना एक बहुत बड़ा अपराध है। लेकिन सच्चाई ठीक इसके विपरीत है। देश की स्वतन्त्रतता के इन 65 वर्षो में अब तक मजहब, जाति और क्षेत्र के नाम पर ही राजनीति की जाती रही है। संविधान में वर्णित अधिकारों, कानूनों और मर्यादाओं की परवाह न करते हुए मजहब के नाम पर देश और समाज को तोड़ने वाली राजनीति की जाती रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि देश की स्वतन्त्रता के बाद से अब तक सैकड़ों बार हिन्दू–मुसलिम दंगे हो चुके हैं। हजारों लोग इसमें अपने प्राण गँवा चुके हैं। कहना न होगा,आज बहुत से लोग देश से बड़ा अपने 'मजहब' को मानते हैं जबकि देश बड़ा और आदर का पात्र कुछ हो ही नहीं सकता है।

अकबरुद्दीन ओबैसी ने जिस भाषा और शब्दों का अपने कथित भाषण में प्रयोग किया है, उससे तो ऐसा लगता है जैसे इसे न तो भारत के धर्म (मत) निरपेक्ष संविधान, कानून और दण्ड विधान की परवाह है और न तो केंद्र और राज्य सरकार की। लेकिन प्रश्न केवल इतना ही नहीं है, प्रश्न है भारत की राज–व्यवस्था का कि ऐसे घृणा फैलाने वाले असामाजिक, असांस्कृतिक, अनैतिक, अधार्मिक और राष्ट्रद्रोही तत्त्वों पर कोई सिकंजा क्यों नहीं कसा जाता? इसी के साथ प्रश्न यह भी है कि 'ओवैसी–जाकिर ब्रान्ड' इस देश में इतने क्यों स्वछन्द, बर्बर और निरकुंश होते जा रहे हैं? ओवैसी अपने कथित भाषण में आर्यो(हिन्दुओं), गाय, हिन्दू देवताओं, राम, कौशिल्या और अनेकानेक सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक चिन्हों, प्रतीकों, भावनाओं और आस्था की खिल्लियाँ उड़ाता है और सौ करोड़ भारतवासियों को चुनौती दे रहा है, क्या यह किसी देशद्रोह से कम है? क्या ऐसे जहरीले और देशद्रोही व्यक्ति को इसी प्रकार से कुछ भी करने और कहने की छूट देना संविधान और देश के प्रति अपराध नहीं है?

यह कोई बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति जहर उगलने वाली प्रथम दुर्घटना नहीं है, इसके पूर्व सैकड़ों बार अनेक देश, समाज और नैतिकता के शत्रुओं ने देश में घृणा फैलाने और देश में हिंसा को बढ़ाने के लिए अपने संकुचित स्वार्थ में अपने मजहब के लोगों को भड़काया है। लेकिन केंद्र और राज्य सरकारों ने वोट की राजनीति के कारण उन पर कोई वैसी कार्रवाई नहीं की जैसी की जानी चाहिए थी। इसका परिणाम यह हुआ कि ऐसे अराजक तत्त्वों के हौसले लगातार बढ़ते गए और देश में साम्प्रदायिक दंगे होते रहे, लोग मरते रहे।

अकबरुद्दीन ने जिस प्रकार से मजहब, स्वार्थ, सम्प्रदाय और मुसलमान के नाम पर भावना भड़काकर देश की एकता, साम्प्रदायिक सदभावना, शान्ति,, भाईचारा को समाप्त करके देश में हिंसा, दुर्भावना, घृणा, दुर्वृति और अमानवीयता को बढ़ाने का षड्यन्त्र किया है, उसकी जितनी निन्दा की जाए कम ही है। यह बात समझ में नहीं आती कि एक तरफ सरकार देश में शान्ति, सद्भावना, साम्प्रदायिक सद्भाव, भाईचारा और राष्ट्रप्रेम बढ़ाने की बात करती है और वहीं दूसरी तरफ ऐसे देश, समाज और मानवीय संस्कृति को तहस–नहस करने वालों को नियन्त्रण में नहीं रखती है। इसे क्या कहा जाय? क्या ऐसे अराजक तत्त्वों के रहते और उनके काले कारनामों से देश और समाज में सद्भावना और एकता कायम रखी जा सकती है? इससे क्या संविधान की उस भावना का हनन नहीं होता, जिसमें कहा गया है कि किसी को किसी जाति विशेष या धर्म (मत)विशेष के प्रति घृणा फैलाना अपराध की श्रेणी में आता है। फिर क्या 'ओवैसी' इस देशद्रोही और संविधान विरोधी कार्य से अपराधी नहीं साबित हो जाता है? अपने भाषण में ओवैसी उस हिन्दू संस्कृति, धर्म और जीवन शैली की उपहास उड़ाता है जो सीधे–सीधे हिन्दुओं की आस्था, श्रद्धा और मान्यता से जुड़ा हुआ है। वह बाबरी मस्जिद की आड़ में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्म स्थान, उनके ननिहाल और माता कौशिल्या के मायके को जिस प्रकार से मुद्दे की तरह प्रस्तुत करता है, उससे तो यही लगता है कि वह अपने संकुचित सोच, षड्यन्त्र और स्वार्थ के कारण मुसलमानों को लामबन्द कर रहा है। इसी प्रकार वह गाय को एक तरफ हिन्दुओं की माता कहता है तो दूसरी ओर उसे **गाय का मांस खाने में खूब मजा भी आता** है। गाय और गौवंश को मारने का संविधान में पूर्णतः प्रतिबन्ध है। इस बात का भी ओवैसी ने एक बार नहीं कई बार उल्लंघन किया है।

पूरे भाषण में कही गई अनेक अत्यन्त आपत्तिजनक बातों को छोड़ दें, केवल श्री राम, गाय और माता कौशिल्या पर किए गए अनैतिक और अनर्गल प्रलाप पर ही ध्यान दिया जाय तो लगता है, वह सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने और मुसलमानों की भावना भड़काकर उन्हें बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति घृणा और गाय की हिंसा करने के लिए उकसा रहा है। यदि ओवैसी के भाषण पर ध्यान दिया जाय तो लगता है, उसे न तो कुरान की समझ है और न तो भारतीय इतिहास की ही। उसे न तो मुसलमान लेखकों, कवियों और महापुरुषों के द्वारा आर्यो(हिन्दुओं) के सम्बन्ध में लिखे गए गौरव और प्रसंशा के तथ्यों की ही जानकारी है। वह भूल जाता है कि रहीम, रसखान और अन्य मुसलिम कवियों ने विश्व के आदर्श राम और कृष्ण की वन्दना व प्रशंसा की है और गाय को पूज्य माना है। उसे इतना भी नहीं मालुम कि जिस कुरान की दुहाई वह बार–बार देता है, उसी कुरान की कई आयतों में गाय को न मारने और उसके पंचगव्य को बहुमूल्य निरोगवर्धक बताया गया है। ओवैसी का ऐसा आपत्तिजनक और विद्वेषपूर्ण भाषण को मीडिया ने भले ही गम्भीरता से न लिया हो लेकिन यह देश, समाज और भारतीय संस्कृति के लिए बहुत ही खतरनाक है। ऐसे 'ओवैसी ब्राण्ड' देश और समाज में विष घोलने वाले, क्या देश के दुश्मन नहीं हैं? मुसलमानों को भी निष्पक्ष चिन्तन करने की आवश्कता है कि क्या 'ओवैसी ब्राण्ड' लोग ही उनके नेता होंगे, जिससे देश में ही नहीं विश्व में तनाव की स्थिति बनती है।

– 9540067474

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (7 मार्च) पर शुभकामना विज्ञापन

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर इस वर्ष 10 से अधिक अखबारों में विज्ञापन दिए जाएंगे। ज्ञातव्य है, गत वर्ष भी इसी प्रकार से विज्ञापन दिए गए थे, जिससे करोड़ों लोगों के पास महर्षि के अवदान और जीवन दर्शन की प्रेरणा पहुँची। इन विज्ञापनों से जन मानस में महर्षि, आर्य समाज और वेद के प्रति जहाँ जिज्ञासा उत्पन्न होती है वहीं पर श्रद्धा भी पैदा होती है। आर्य महानुभाव, आर्य समाजें, आर्य शिक्षण संस्थाएँ और अन्य आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाएँ इसमें भाग लेकर अपनी पुण्य आहुति सकते हैं। विज्ञापन की दर 1500/– रु0 एवं फोटो सहित 3000/– रु0 प्रति व्यक्ति/संस्था है। इसके लिए चेक **'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** को भेजा जाना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए उपमन्त्री **श्री सतीश चड्ढा जी (09540041414)** से सम्पर्क करें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री

इतिहास के पन्नों से

स्वाधीनता संग्राम : महर्षि दयानन्द-आर्यसमाज और अंग्रेजी साम्राज्य

एक ऐतिहासिक विश्लेषण

पुण्य तिथि : 18 जनवरी पर विशेष

वैज्ञानिक एवं संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज की भूमिका के सम्बन्ध में मोटे तौर पर आर्यजन जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि तत्कालीन जितने भी आन्दोलन थे उनमें आर्य समाज सबसे अधिक सक्रिय और उग्र था। लेकिन भारत के इतिहास में आर्य समाज के सम्बन्ध में अधिकतर दुराग्रहपूर्ण मानसिकता से ही लिखा गया है। इसका कारण यह है कि जितने भी प्रसिद्ध इतिहासकार हुए हैं उन्होंने आर्य समाज के उस पक्ष पर ध्यान ही नहीं दिया जो स्वदेशी, स्वराज्य, स्वधर्म, स्वदेश और आदर्श समाज की भूमिका को लेकर हैं। आज भी स्वाधीनता के 65 वर्ष के उपरान्त भी आर्य समाज के समग्र योगदान और मानवता के लिए किए गए इसके 'अवदान' को हम न तो इतिहासकारों को ठीक से बता सकें हैं और न तो उस समाज को जो आर्य समाज को मात्र खण्डन-मण्डन करने वाली या प्रेम-विवाह कराने वाली महज एक संस्था के रूप में मानते आ रहे हैं। आर्य समाज के मनीषी विद्वान, इतिहासकार और गवेषकों ने अपने कठिन अध्यावसाय से आर्य समाज के उन अनेक पक्षों को जन मानस के सम्मुख लाने का प्रयास किया है, जिसे आर्य समाज से सम्बन्ध रखने वाले आर्य बन्धु भी नहीं जानते हैं। इन्हीं इतिहासकारों और गवेषकों में आर्य जगत् के महान वैज्ञानिक, साहित्यकार, वेदज्ञ, भाषाविद्, शिक्षाविद् और लेखक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने अपनी पुस्तकों में स्वाधीनता समर के इतिहास को बहुत ही प्रेरक और जीवन्तता के साथ वर्णित किया है। स्वामी जी की पुण्यतिथि 18 जनवरी पर उनकी पुस्तक 'राजनीतिक संस्मरण' से स्वाधीनता समर के कुछ ऐसे अंशों को जानकारी और प्रेरणा के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है जो कई दृष्टि से उपयोगी हैं। आशा है पाठकों के लिए लेख उपयोगी और प्रेरक होगा। लेख प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य स्वामीजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को स्मरण करना-कराना और आर्यजनों को उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित करना है।

सन् 1920 में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने ही नहीं, समस्त देश ने राजनीतिक क्षेत्र में अहिंसात्मक असहयोग के आन्दोलन का प्रयोग किया और यह आन्दोलन सन् 1922 में वापस ले लिया गया। भारत के राजनीतिक संघर्ष के इतिहास में जहाँ इस आन्दोलन की घटना अमर रहेगी, वहाँ इसके अतिरिक्त और भी ऐसे क्षेत्र हैं, जिनकी पृष्ठ-भूमि में भी अनेक राजनीतिक कलाएँ चरितार्थ होती रही हैं, क्योंकि आरम्भ से अब तक मेरा सम्बन्ध आर्यसमाज से रहा है। आर्यसमाज के राजनीतिक जीवन से भी मैं परिचित रहा हूँ। साधारणतः भारत की राजनीति के इतिहास में इस जीवन की चर्चा नहीं की जाती है, और सामान्य जनता इससे परिचित भी नहीं है, अतः इन संस्मरणों का उल्लेख करना मैं अधिक उचित समझता हूँ।

सम्प्रदायवादिता हमारे राजनीति के मार्ग में किस प्रकार उपस्थित हो गई, यदि इसको भी सच्चे रूप से समझना हो, तो आर्यसमाज की राजनीतिक स्थिति की अवहेलना नहीं की जा सकती है। मैं इस बात की उलझन में तो नहीं पड़ना चाहता कि आर्यसमाज विशुद्ध धार्मिक संस्था है, या राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक। मेरी दृष्टि में तो यह मानव-संस्था है। इस संस्था में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यूरोपवासी सभी सम्मिलित हो सकते हैं, यदि वे समाज के आचार-विचार और नियमोपनियमों से सहमत हों। इस सम्बन्ध में सन् 1883 के 'आर्य मैगजीन' में किसी के आक्षेप के उत्तर में निम्न पक्तियाँ छपी थीं।

" Again it is asserted that the Arya Samaj is at present considered a Samaj of the Hindus. Poor fellow, he is not aware that there are also Mohamedam and European gentlemen as members of the Samaj--" (पुनः आजकल यह जोर देकर माना जाता है कि आर्यसमाज एक हिन्दू संगठन है। बेचारे यह नहीं जानते कि मुसलमान और यूरोपियन सज्जन भी आर्यसमाज के सदस्य हैं)

मूलतः आर्यसमाज हिन्दुओं के जितने निकट था, उतना ही मुसलमानों और ईसाइयों के। पर धीरे-धीरे हिन्दुओं की साम्प्रदायिकता किस प्रकार बढ़ती गई, इसका इतिहास अलग है, जिसका उल्लेख करना यहाँ उचित नहीं समझता। जिस प्रकार कांग्रेस में सभी लोग सम्मिलित हैं (यद्यपि प्रधान संख्या हिन्दुओं की है) आरम्भ में ह्यूम (कांग्रेस के संस्थापक) सदृश अभारतीय भी जिस प्रकार कांग्रेस में थे, उसी प्रकार आर्य समाज भी समस्त मानव समाज का प्रतिनिधित्व करता था। भारत में अपने ढंग की यह पहली संस्था थी जो सभी सम्प्रदायों की साम्प्रदायिकता और उनके अन्धविश्वास दूर करना चाहती थी। राजनीति भी मानव विषय है, इस दृष्टि से राज धर्म की चर्चा भी आर्यसमाज का आवश्यक विचारणीय विषय रहा है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में राजधर्म की चर्चा की है। महर्षि दयानन्द के जीवन-काल की एक घटना है। बनारस में उन्होंने 'राज-प्रजा-धर्म' पर कई व्याख्यान दिए। इन व्याख्यानों में से एक व्याख्यान सुनकर, एक अंग्रेज अफसर ने यह कहा कि यदि स्वामी जी का यह व्याख्यान सन् 1897 के विप्लव से पूर्व हुआ होता, तो सम्भवतः देश में विद्रोह होता ही नहीं। सम्भव है, उस व्याख्यान में अंग्रेज अफसर ने प्रजाधर्म की चर्चा विशेष रूप से सुनी हो। पर बाद में बनारस के जिलाधिकारी ने महर्षि के इन व्याख्यानों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भारत के इतिहास में राजनीतिक व्याख्यानों पर प्रतिबन्ध लगाए जाने का यह पहला उदाहरण है। काशी के मैजिस्ट्रेट को सम्भवतः 'राजा का धर्म क्या है'? इस विषय के वर्णन में विद्रोह की गन्ध मिली हो। 'पायनियर' अखबार ने महर्षि के पक्ष में कुछ लिखा। प्रान्तीय सरकार ने काशी के मजिस्ट्रेट को तार भेजा और व्याख्यान पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

महर्षि दयानन्द भारतीय सरकार के लिए एक पहेली थे। इस सरकार के अफसर ईसाई थे। अतः पौराणिक धर्म का खण्डन सुनते समय उन्हें सन्तोष होता था। कुछ हिन्दुओं में भी यह भ्रान्ति थी कि महर्षि सरकार के एजेन्ट हैं, और हिन्दुओं को ईसाई बनाना चाहते हैं। पर ईसाई और मुसलमानी मत का खण्डन सुनकर ईसाई भी उद्वेलित होने लगे। सन् 1857 के देशव्यापी विप्लव में महर्षि उदासीन रहे। इतिहास इस विषय पर मौन है कि इस विद्रोह की प्रतिक्रिया महर्षि दयानन्द के जीवन पर क्या पड़ी? सम्भवतः यह वह समय रहा होगा, जब वे साधुओं के मठों में विचर रहे होंगे, जहाँ पर देशव्यापी आन्दोलन का प्रभाव नहीं पहुँचा होगा। पर बाद को भी कहीं महर्षि ने इस आन्दोलन का उल्लेख नहीं किया।

महर्षि दयानन्द ने जिस निःस्पृहता के साथ भारतवर्षीय समस्त साम्प्रदायिक धर्मों की आलोचना की थी, उसका तात्कालिक प्रभाव यह पड़ा कि सभी लोग उनके विरोधी हो गए। उनकी मृत्यु के अनन्तर यह विरोध और बढ़ गया। इसके प्रमाण-स्वरूप हम यह पाते हैं कि सन् 1899 में सहारनपुर जिले के तितरोन स्थान के कुछ मुसलमानों ने सहारनपुर के ज्वांइट मजिस्ट्रेट कॉक्स की कचहरी में लाला चन्द्रभान के विरुद्ध यह अर्जी दी, कि इन्हें एक विशेष मकान में समाज के अधिवेशन करने की आज्ञा न दी जाए, क्योंकि उस मकान के पड़ोस में मुसलमानों के मकान हैं। पर मुसलमानों की यह अर्जी खारिज हो गई।

मुसलमानों की तो यह साम्प्रदायिक प्रवृत्ति थी ही। उधर कुछ सनातनधर्मियों ने दूसरे प्रकार से विरोध प्रदर्शित किया। सन् 1902 में मेरे इसी प्रयाग नगर में आलाराम नामक एक व्यक्ति ने महर्षि दयानन्द के विरुद्ध व्याख्यान देने आरम्भ किए। उसने अपशब्दों का प्रयोग तो किया ही। साथ में यह भी कह डाला कि स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज राजविद्रोही हैं, और सत्यार्थप्रकाश राजविद्रोह के आदेशों से भरा पड़ा है। व्याख्यानों में घृणित अपशब्दों का प्रयोग करने के कारण सरकार ने उसका दफा 108 में चालान किया। इस मुकदमे के बयान में आलाराम ने यह सिद्ध करना चाहा कि आर्य समाज का संगठन ब्रिटिश सरकार के साथ विद्रोह करने के उद्देश्य से हुआ है। सत्यार्थप्रकाश से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए गए, जिनसे यह सिद्ध करने का प्रयास हुआ कि आर्यसमाज ब्रिटिश राज्य को भारत से निकालना चाहता है।

यह अभियोग भी समाप्त हुआ। धीरे-धीरे इस अभियोग की प्रतिध्वनि अन्य स्थलों से भी आने लगी। ये सब अभियोग जनता के किसी व्यक्ति की आड़ लेकर आरम्भ किए जाते थे, पर इनके अन्दर-ही-अन्दर राज्य के कर्मचारियों का षडयन्त्र भी रहता था। एक बार एक अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने आर्य समाज के एक कर्मचारी से यह कह डाला- It is believed that Aryas are not loyal and purposely boycott British Officials. अर्थात् आर्यसमाजी राजभक्त नहीं हैं और जानबूझकर ब्रिटिश अफसरों के साथ अहसयोग करते हैं।

इन्हीं दिनों काँगड़ी (हरिद्वार) में गुरुकुल की स्थापना हुई। समस्त प्राच्य विषयों के साथ-साथ धनुर्वेद की शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में स्थान मिला। गुरुकुल नगर से दूर एकान्त स्थल पर स्थापित किया गया था। फल यह हुआ कि यह कहा जाने लगा कि राज-विद्रोह की सामग्री तैयार की जा रही है, और किसी हिंसात्मक आन्दोलन की नींव पड़ रही है। उस समय बिजनौर जिले का कलक्टर फोर्ड था और हेवेट इस प्रान्त के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। उन्होंने शान्ति से काम लिया, नहीं तो किंवदन्तियों में गुरुकुल को विद्रोही सिद्ध करने के समुचित प्रयत्न हो रहे थे। महात्मा मुंशीराम को सर जॉन हेवेट ने बुलाया और परिस्थिति समझने का प्रयत्न किया। गुरुकुल से विपदा हट गई।

सर जॉन हेवेट के मन में आर्यसमाज के विरुद्ध फिर भी संशय तो बना ही रहा। ये अधिकारीगण कुशल नीतिज्ञ प्रसिद्ध रहे हैं। इनकी ऊपर और भीतर की नीति में सामंजस्य ढूंढ़ना बहुधा कठिन हो जाता है।

– शेष अगले अंक में

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ शंका समाधान सत्र

अविस्मरणीय योजनाओं, व्यवस्थाओं व वैदिक सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुँचाने के संकल्प के साथ आयोजित अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में दस विशेष हॉल बनाए गये थे, जिनमें विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर गोष्ठियाँ, परिचर्चाएँ, पावर पोईन्ट प्रेजेन्टेशन आदि आयोजित किए गये। हाल नं.–2 में शंका समाधान सत्र आयोजत किए गये।

25 अक्टूबर को उद्घाटन समारोह के बाद अपराहन 3.30 बजे से ही उस हाल में शंका समाधान प्रारम्भ हो गया था। चार दिन में 3–3 घंटे के कुल 13 सत्र चले। अत्यन्त व्यवस्थित विधि से जिज्ञासुओं को शंका लिखने के लिए प्रपत्र दिए जा रहे थे। शंकाओं को सत्र में उपस्थित विद्वान को दिया जाता था। प्रत्येक सत्र का विषय निश्चित था। यथा– यज्ञ, कर्मकाण्ड, ईश्वर का स्वरूप, योग, अध्यात्म, कर्मफल व्यवस्था, युवामन की समस्याएँ, साधना के बाधक तत्त्व, वैदिक सिद्धान्त व आर्ष ग्रन्थों के गम्भीर विषय। उक्त विषयों पर अपनी–अपनी शंकाएँ करने वाले जिज्ञासु विद्वज्जनों से उत्तर पाकर अत्यन्त सन्तुष्ट देखे गये। उक्त हॉल में चले शंका समाधान में सर्वाधिक समय स्वामी विवेकानन्द जी 'परिव्राजक' (रोजड़) ने दिया। जीवन के सभी पक्षों पर 6 सत्रों में स्वामी जी ने शंका समाधान किए। डॉ. विनय विद्यालंकार ने दो सत्रों में सरलता के साथ सैद्धान्तिक पक्षों का समाधान किया। डॉ. धर्मवीर जी (परोपकारिणी सभा) आचार्य ज्ञानेश्वर जी (रोजड) डा. सूर्यादेवी चतुर्वेदा(वाराणसी), मुम्बई के श्री मदन रहेजा व डा. सुमेधा जी आदि विद्वान् व विदुषियों ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक जिज्ञासुओं के ज्ञान पिपासा का शमन किया।

प्रत्येक सत्र में अध्यक्षता के लिए भी आर्य जगत् के विद्वान् व नेता उपस्थित रहे। सत्र संचालन में आर्य समाज ग्रेटर कैलाश भाग–1 की समर्पित टीम रही, जिसमें सर्वश्री राजेन्द्र वर्मा, दीपक खन्ना, अमर सिंह पहल, जितेन्द्र सिंह , जितेन्द्र चौहान, श्रीमती अमृत पाल व श्रीमती रेनु चौधरी सम्मलित थे।

– **राजीव चौधरी, संयोजक**

महासम्मेलन के अवसर पर 'शंका समाधान सत्र' की अध्यक्षता करते स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती 'परिव्राजक' एवं उपस्थित जिज्ञासुगण

काव्य सलिला

जरूरी है संवेदनाओं का जिन्दा रहना

और जब हमारी संवेदनाएँ
हों जाएँ तार-तार
हमारा मनुष्य होने का मतलब नहीं रह जाता,
यदि मुझमें नहीं है
घुटती मानवता के प्रति छटपटाहट
दुखियारों के प्रति सहानुभूति
अत्याचार के खिलाफ विद्रोह
वहशीपन के प्रति घृणा
महज शब्द बुनने का कोई अर्थ नहीं होता है,
हमारी संवेदनाएँ ही तो हैं
जो हमें पशुओं से अलग करती हैं,
और जो हमें सही मायने में
मनुष्य होने का एहसास दिलाती हैं,
इस लिए संवेदनाओं का जिन्दा रहना
मनुष्य के जिन्दा रहने का मूर्त लक्षण है,
हम उसी दिन मर जाते हैं
जब मर जाती हैं,
हमारी संवेदनाएँ
और मर जाता है 'अन्दर का आदमी'।

– अखिलेश आर्येन्दु

(साभार : जरूरी है संवेदनाओं का जिन्दा रहना 'काव्य संग्रह' से)

सुखी जीवन का आधार है 'संस्कार' पर कार्यशाला

पिछले दिनों आर्य समाज ग्रेटर कैलाश भाग–1 में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 'सुखी जीवन का आधार– संस्कार' पर किया गया। जिसमें आर्यसमाजी परिवारों के अतिरिक्त अनेक युवक–युवतियों ने भागीदारी की।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डा. विनय विद्यालंकार ने 'एल.सी.डी. प्रोजेक्शन' के माध्यम से दो सत्रों में संस्कारों के वैज्ञानिक व व्यावहारिक महत्व को प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में जन्म से पूर्व के तीन संस्कारों गर्भाधान, पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कारों को जीवन के भव्य भवन की नींव बताया । दूसरे सत्र में शेष 13 संस्कारों के वैज्ञानिक व व्यावहारिक पक्ष को विस्तार से रखा।

श्री नीरज मुंजाल–एम.डी. M/s Shivam Auto Tech. Ltd. एवं श्रीमती चारु मुंजाल इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर हीरो ग्रुप के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बृजमोहन लाल मुंजाल, श्रीमती प्रियंका मल्होत्रा सी.ई.ओ.– Nipman Foundation श्री अनिल कुमार सी.ई.ओ MySource Innoventures Pvt.Ltd. आदि विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का आयोजन वेद प्रचार समिति के श्री लखनपाल व राजीव चौधरी द्वारा किया गया। इसके आयोजन में जी.के. एन्क्लेव के संजीवजी एवं रितू चोपड़ाजी का विशेष सहयोग रहा।

'संस्कार' कार्यशाला में अपना उद्बोधन देते डॉ. विनय विद्यालंकार एवं उपस्थित श्रोतागण

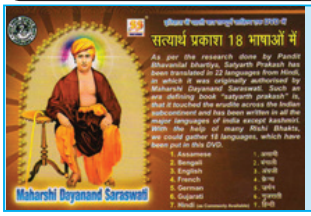

आर्यजनों के लिए खुशखबरी-साहित्य पढ़ें सीडी से
महर्षि दयानन्दकृत सम्पूर्ण साहित्य एवं सत्यार्थ प्रकाश (18 भाषाओं में)
सीडी में उपलब्ध मूल्य मात्र 30/-रु.

गतांक से आगे

वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या : एक जनोपयोगी निदर्शन

इस धातु के अर्थों में सतत 'चेष्टा और प्रयत्न' का संकेत है। अतः इसका मूल अर्थ 'गति' रहा होगा। शब्दकोश में इस धातु का अर्थ 'आकर्षित करना' अथवा अपनी ओर से खींचना भी मिलता है। स्पष्ट है कि ग्रह शब्द का मूल भाव है– जो गति करता है और आकर्षण ये युक्त है।

'अश्व' शब्द भी वेदों में है। यह शब्द 'अश्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'व्याप्ति'। अतः अश्व वह वस्तु है जो व्यापक है। जब अश्व विशेषण के रुप में प्रयुक्त होता है तब उसका अर्थ 'बलवान्' किया जाता है। अतः अश्व बल से भी सम्बन्धित है। आज का विज्ञान भी अश्व को शक्ति के माप के रूप में प्रयुक्त करता है। अतः अश्व एक प्रकार का व्यापक बल है।

अश्व के लिए प्रयुक्त होने वाले एक अन्य शब्द, हरित से इस बल की विशेषता का पता चलता है। यह शब्द 'हृ' धातु से बना है जिसका एक अर्थ 'आकृष्ट करना' है। अतः हरित् का अर्थ 'आकर्षण वाला' है। इस प्रकार, अश्व का अर्थ व्यापक आकर्षण बल किया जा सकता है, जो सूर्य में विद्यमान है तथा अन्य पिण्डों तक व्याप्त है।

उदाहरणार्थ, अस्यवामीय–सूक्त के दो मंत्रों (ऋग्वेद 1.164) को लें, जिनमें इन तीनों शब्दों का प्रयोग हुआ है। पहला मंत्र इस प्रकार है– **सप्त युञ्जन्ति रथम् एक–चक्रम्, एको अश्वो वहति सप्तनामा। त्रिनाभि चक्रम अजरम् अन्–अर्वम्, यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः।। ऋ. 1. 164.2**

एक चक्र वाले रथ को सात योजित करते हैं। सात नामों वाला एक अश्व वहन करता है। तीन नाभियों वाला चक्र जरा–रहित, किसी पर आश्रित नहीं (है) –जहाँ ये विश्व भुवन अधिस्थित हैं।

इस मंत्र में सौर मण्डल का एक रथ के रूप में वर्णन है। इस रथ को योजित करने वाले सात सौर ग्रह हैं। अश्व गुरुत्वाकर्षण बल है जो सात ग्रहों पर उनकी सात कक्षाओं में लगने के कारण 'सात नामों वाला' कहा गया है।

ग्रह की कक्षा को चक्र कहा गया है, जो सूर्य के चारों ओर ग्रह के घूमने से बनता है। चक्र अथवा ग्रह की कक्षा तीन केन्द्रों वाली है। वृत्ताकार कक्ष का एक केन्द्र होता है। किन्तु वृत्ताकार कक्ष को दोनों ओर से लम्बा करके अण्डाकार बना देने पर उसकी दो नाभियाँ और बन जाती हैं। इन्हीं में से एक नाभि पर सूर्य स्थित रहता है। अतः **त्रिनाभि चक्रम** का आशय तीन केन्द्रों वाले अण्डाकार कक्ष से है।

ग्रह–कक्षा कभी जीर्ण होने वाली नहीं है, इनका आधार जैसा है सदा एक–सा रहता है। यह किसी पर आश्रित नहीं है, अर्थात्, गुरुत्वाकर्षण के नियम में बँधा हुआ ग्रह स्वतः ही सूर्य के चारों ओर अपनी कक्षा में परिभ्रमण करता रहता है। इस प्रकार की अण्डाकार कक्ष–पद्धति में सारे भुवन अर्थात् ग्रह स्थित हैं।

अगले मंत्र में एक अन्य भी वैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन किया गया है। मंत्र इस प्रकार है–**इमम् रथम् अधि ये सप्त तस्थुः, सप्त–चक्रं सप्त वहन्त्य् अश्वाः। सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते, यत्र गवां नि हिता सप्त नाम।।** ऋग्वेद 1.164.3

इस रथ में जो सात स्थित हैं। सात अश्व सात चक्रों वाले को वहन करते हैं। स्वयं चलने वाली सात उस ओर अभिमुख होकर चलती है जहाँ गौओं के सात नाम निहित [हैं]।

सौर–मण्डल–रथ में सात ग्रह अपनी–अपनी कक्षाओं में स्थित हैं। पूर्व मंत्र में **त्रिनाभि** शब्द द्वारा ग्रह–कक्षा को अण्डाकार बताया गया है। सूर्य की आकर्षण शक्ति, अर्थात्, अश्व एक ही है। वही सब ग्रहों को भ्रमण कराती है। यह शक्ति सात ग्रहों की ओर जाती है। अतः सात धाराओं में प्रवृत्त हो जाने के कारणों से अश्वों को सात बताया गया है। प्रत्येक ग्रह पर लगने वाले आकर्षण बल को अलग–अलग अश्व माना गया है।

ये आकर्षण बल ग्रहों द्वारा सूर्य का चक्कर लगाने का कारण है, अर्थात्, इन्हीं आकर्षण बलों के कारण ग्रह सूर्य के चारों ओर अपनी–अपनी कक्षा (चक्र) में घूमने लगते हैं, अतः इन सात अश्वों, अथवा आकर्षण बलों को सात चक्रों वाले सूर्य–मण्डल–रथ को वहन करने वाला कहा गया है।

मंत्र के दूसरे भाग में स्वयं चलने वाली सात (किरणों) का वर्णन है जो 'स्वसा' कही गई हैं। यहाँ 'स्वसार' शब्द बड़ा सार्थक है। यह सूर्य की किरणों के लिए प्रयुक्त हुआ है। किरणें ही स्वचालित होती हैं, पदार्थ के कण स्वचालित नहीं होते। पदार्थ के कणों को गति किसी दूसरे शक्तिमान् पदार्थ अथवा बाह्य बल से प्राप्त होती है। स्वसाओं की सप्त संख्या से किरणों के सात रंगों की ओर संकेत है अर्थात्, श्वेत प्रकाश सात रंगों से बना होता है, यह बताया गया है।

ये किरणें वहाँ पहुँचती हैं जहाँ गौओं, अर्थात्, ग्रहों के सात नाम निहित हैं, किरणें ग्रहों को प्रकाशित करती हैं। वैदिक मंत्र स्पष्ट रूप से कहता है कि सप्त ग्रह स्वप्रकाशित पिण्ड नहीं हैं, बल्कि सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। यह एक ऐसी घटना है जिसका पता आसानी से नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि रात्रि के समय ग्रह और नक्षत्र एक समान चमकते प्रतीत होते हैं तथा सही–सही बताना नितान्त असम्भव होता है कि उनमें कौन स्वप्रकाशित पिण्ड है तथा कौन नहीं है। विज्ञान विभिन्न यंत्रों की सहायता से ग्रहों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है। उपर्युक्त व्याख्याओं से स्पष्ट है कि उपर्युक्त प्रणाली द्वारा शब्दों के अर्थ करने से वैदिक मंत्रों के वैज्ञानिक तथ्य प्रकट होते हैं। इन प्राप्त वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि वेदों में अनेक ऐसे सत्य उद्घाटित किए गए हैं जो आज के विज्ञान से पूर्ण साम्य रखते हैं।

– डॉ. मृदुला गुप्ता

आर्य वीरदल बिहार का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी से 3 मार्च 2013 तक

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, दयानन्द जन कल्याण आश्रम, ग्राम व पत्रालय जरैल, वाया बेनीपट्टी, जनपद मधुबनी, बिहार में आर्य वीरदल बिहार प्रान्त का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी 2013 से 3 मार्च 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान स्वामी देवव्रत सरस्वती एवं प्रान्तीय दो दिवसीय आर्य सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधाना साध्वी उत्तमायतिजी, सार्वदेशिका सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्यजी, आर्ष गुरुकुल कोलाघाट, बंगाल के आचार्य श्री ब्रह्मदत्तजी, दिल्ली सभा के प्रधान ब्र.राजसिंह आर्यजी, बिहार प्रान्त के आर्य वीरदल के प्रधान पं. व्यासनन्दन शास्त्रीजी, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगाप्रसादजी एवं मन्त्री श्री रमेन्द्र गुप्तजी, सार्व. आर्य वीरदल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक, श्री हरिसिंह आर्यजी , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्यजी, आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्यजी, आर्य वीरदल उ.प्र. के शिक्षक श्री राजेश आर्यजी, आर्य वीरदल के शिक्षक श्री कर्मवीरजी एवं आचार्य सुश्रुतजी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। शिविर में बिहार प्रान्त के सभी आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से अपील की गई है कि इस विशेष अवसर पर अपने समाज एवं संस्थाओं में कोई भी कार्यक्रम आयोजित न करें और समाज एवं आर्य संस्थाएँ 12 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के युवाओं को शिविर में भेजें। शिविर में भग लेने वाले सभी आर्य वीरों को खाकी हाफ पेन्ट, दो सेन्डो बनियान, सफेद मोजे, सफेद जूते, लंगोट, लाठी, कॉपी, पेन टार्च, भोजन पात्र, पहनने और बिछाने के वस्त्र, तोलिया, साबुन, तेल आदि आवश्यक वस्तुएँ साथ अवश्य लाएँ।

शिविर का पहुँच मार्ग–दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता एवं अन्य स्थानों से आने वाले महानुभाव दरभंगा/मधुबनी आएँ। पटना, दरभंगा, समस्तीपुर एवं मुजफ्फरपुर से बेनीपट्टी की बस में बैठकर हनुमान चौक उतरकर गुरुकुल आ जाएँ।

बिहार के इस पिछड़े क्षेत्र के इस गुरुकुल में आचार्य सुशील जी के संचालन में 24 बालक अध्ययनरत हैं। गुरुकुल में और अधिक बच्चे आकर आर्ष परम्परा के अनुसार विद्याध्ययन करें, इसके लिए आवश्यक है, इसके संसाधनों में वृद्धि हो। अनेक संघर्षों के उपरान्त भी गुरुकुल अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित है। गुरुकुल का उद्देश्य ही आर्य समाज, वेद एवं महर्षि दयानन्दजी के उद्देश्यों को पूर्ण करने वाले बालक तैयार करना। आर्य महानुभावों का गुरुकुल के प्रति सहयोग आपेक्षित है। दानी आर्यजन अपना सहयोग गुरु**कुल दयानन्द वाणी के नाम पंजाब नेशनल बैंक बेनीपट्टी शाखा के बचत खाता संख्या 0586002100002941 है। ूकर कोड 847024504 एवं आइ.एफ.एस. सी कोड पी.यू.एन.बी. 0058600 है। सहयोग राशि चैक/ड्राफ्ट से भी भेजा जा सकता है।**

आचार्य सुशील, संचालक, आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल, वायुदूत : 09199737901, 08809852187

विशेष –शिविर से पूर्व श्री सतेन्द्र आर्य जी द्वारा 1 फरवरी से 24 फरवरी2013 तक विभिन्न ग्रामों में जन–जागरण और वेद कथाओं के कार्यक्रम आयोजित है।

आर्य कन्या की आवश्यकता

बिहार प्रान्त निवासी आर्य युवक अध्यापनरत योग्य शिक्षक, वैदिक युवा विद्वान् एम.ए,बी.एड/ नेट जे.आर.एफ/ योग डिप्लोमा, बी.एस.टी.ई.टी.उत्तीर्ण, पी.एच.डी. शोधरत शाकाहारी (अद्यतन दिल्ली में) कद–5.6, श्यामवर्ण, शरीर गठीला, शाकाहारी के लिए सुन्दर सुशील, सुशिक्षित बी.ए., बी.एड., /आचार्य/एम.ए.एवं गुरुकुलीय आर्य कन्या की आवश्यकता है। (बिहार निवासिनी को प्राथमिकता) दहेजप्रथा एवं जातिबन्धन नहीं है। **सम्पर्क सूत्र– 9990686833, 09135221010, 9868604627 ई–मेल :–** acharyadnshastri1980@redifmail.com

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्रीनगर, लुधियाना (पंजाब) में 6वीं एवं 7वीं कक्षा में प्रवेश की प्रक्रिया के लिए आवेदन आमन्त्रित हैं। कन्या की आयु 9 एवं 11 वर्ष होना चाहिए। नियमावली एवं पंजीकरण पत्र 100 रुपये भेजकर मँगायें जा सकते हैं। कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 07 अप्रैल2013 को प्रातः 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

– आचार्या, दूरभाष 0161–2459563

बलिदान दिवस पर प्रतियोगिता सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं आदर्श गौशाला, खेड़ाखुर्द, नईदिल्ली में 26 व 27 दिसम्बर 2012 को अखिल भारतीय संस्कृत व्याकरण व वैदिक सिद्धान्त प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखण्ड व हरियाणा आदि के गुरुकुलों के छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को लाला गणेशदासजी के करकमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। लालाजी ने 22000 रुपये की पुस्तकें गुरुकुल खेड़ाखुर्द को दान में और 3500 रुपये की पुस्तकें छात्रों को पुरस्कार में दीं। – **आचार्य सुधांशु**

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का 76 वाँ वार्षिकोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

वाराणसी । आर्य समाज लल्लापुरा का 76 वाँ वार्षिकोत्सव 20 दिसम्बर से 23 दिसम्बर2012 तक उत्साह और उल्लास के वातावरण में समारोह पूर्वक मनाया गया। 20 दिसम्बर को प्रातः 8 बजे से यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार किये गये। अपराह्न 2 बजे से नगर कीर्तन में गाड़ियों पर बैनर, पोस्टर व झंडे लगाकर नगर के विभिन्न मार्गों पर चलकर प्रचार किया गया। 21 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक प्रातः 8 बजे से पाणिनि कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के पौरोहित्य में यज्ञ किया गया। 22 दिसम्बर को महिला सम्मेलन–"**भारतीय नारी और धार्मिकता**" विषय पर श्रीमती गीता देवी (प्राचार्या संजय शिक्षा निकेतन) आचार्य शिवदत्त पाण्डेय (सुल्तानपुर) श्री अमर सिंह वाचस्पति (अजमेर) स्वामी राजेन्द्र योगी (मिर्जापुर) श्री सत्यमुनि वानप्रस्थी (मिर्जापुर) ने अपने विचार व्यक्त किये तथा दिल्ली दुष्कर्म घटना के विरोध में महिलाओं ने सभा स्थल से जुलूस निकाला और लहुरावीर आजादपार्क में सभा की। 23 दिसम्बर की परिचर्या का विषय "**क्या कहें आर्य या हिन्दू**" पर विद्वानों ने अपने व्याख्यान एवं भजनोपदेशकों ने अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को ज्ञान गंगा में स्नान कराया।

सभा का संचालन मंत्री कृष्ण कुमार आर्य व पूर्व प्रधान श्री लक्ष्मी नारायण आर्य ने संयुक्तरूप से प्रधान श्री अनन्त लाल आर्य के निर्देशन में किया – **कृष्ण कुमार आर्य, मंत्री**

देश के अमर बलिदानियों को स्मरण किया गया

1. आर्य समाज रामनगर रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड में देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु किये गये प्रयास एवं बलिदान देने वाले अमर बलिदानियों में भाई मान्य श्री पमानन्द जी, 8 दिसम्बर 1947 में भारत के दुःखद बटवारे को लेकर अपने प्राण त्याग दिये और अमर हो गये। जबकि देश को स्वतंत्र कराने में भाई परमानन्द का बहुत बड़ा योगदान रहा। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. प्रेमचन्द्र शास्त्री रहे।

2 इसी प्रकार 15 दिसम्बर को लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति में शान्ति यज्ञ किया गया तथा इनके कृतत्व व व्यक्तित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला गया और बारडौली की समस्या व देश को अखण्ड बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। ज्ञातव्य है देश की 565 रियासतों को एकसूत्र में बांधने का असम्भव कार्य आप के ही हाथ हुआ था।

3. इसी क्रम में 19 दिसम्बर को देश के महान बलिदानियों पं. रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन लाल व अशफाक उल्लाह खान आदि को एक बड़े कार्यक्रम में स्मरण किया गया।

4. 26 दिसम्बर को सरदार उधमसिंह के जन्म दिवस पर आर्य समाज राम नगर रुड़की ने महायज्ञ किया और इनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला गया। कार्यक्रमों में अनेक आर्य महानुभाव व गणमान्य उपस्थित थे।

–तेजपाल सिंह आर्य, उपप्रधान

आपकी प्रतिक्रिया अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : जैसा मैंने देखा

सफल रहा आर्य महासम्मेलन

संयोजक जी,नमस्ते।

प्राकृतिक बाधा तथा बिघ्नों द्वारा उपस्थित किये बाधा का सामना करते हुए 'अन्तरराष्ट्रीय महासम्मेलन' पूर्णतः सफल बनाने में आप आर्यवृन्दों को काफी सफलता प्राप्त हुई। आप सभी आयोजक मण्डली साधुवाद के प्रात्र हैं।

हम सभी सम्यक्–दृष्टि से सूझबूझ के साथ आयोजित सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। हम ऐसे कार्यक्रम में सम्मिलित होकर गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

आर्यो की काफी संख्या सम्मिलित हुई थी। सम्मिलित सभी व्यक्तियों को सभी तरह की सुविधा प्रदान करना आसान कार्य नहीं था। आप ने बड़ी खूबी से सारी व्यवस्था की। साथ, कई आर्य विद्वान भी उपस्थित रहे। उन सब की प्रतिष्ठा रखते हुए उन्हें मंच पर आमन्त्रित कर अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार प्रदान करना कम बड़ी बात नहीं है। ये सारी बातें प्रसंशनीय हैं।

प्राकृतिक आपदा के कारण हमारे आवास की व्यवस्था हो नहीं सकी, पर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने जनकपुरी आर्य समाज में हमारे आवास की व्यवस्था की तथा अन्य बातों की ओर ख्याल रखा। अपनी समाज की बस से कार्यक्रम स्थल फिर वापसी की भी व्यवस्था की। उनके सहयोग से हम सम्मेलन में सम्मिलित हो सके। पुनः आप सब को साधुवाद। **आपका**

– डॉ. चन्द्रकान्त वि. गर्जे, 11 भोसल, इलायट, पुणे–411007 (महा.)

स्वतन्त्रता संघर्ष शताब्दी समारोह

पिछले दिनों उतरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल व आर्य वीरदल, दिल्ली प्रदेश की ओर से क्रान्तिकारी मास्टर अमीर चन्द, भाई बाल मुकुन्द, अवध बिहारी, वसन्त कुमार विश्वास के 'स्वतंत्रता संघर्ष शताब्दी समारोह' रानी बाग, नई दिल्ली में संकल्प और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर लेखक श्री रविचन्द्र गुप्ता ने कहा,सौ वर्ष पूर्व आज ही के दिन इन वीरों ने राजधानी दिल्ली चाँदनी चौक में वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम प्रहार करके कभी सूर्य अस्त न होने वाली ब्रिटिश सत्ता को हिलाकर रख दिया था। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य वीरदल दिल्ली के संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य, समाज सेवी श्री सुनील नारंग, समाज सेविका माता प्रेम लता शास्त्री ने चन्द्रमोहन आर्य की पुस्तक 'महान देशभक्त' का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री अशोक विद्यालंकार ने शहीद हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर उनके समाज कल्याण व राष्ट्रीय एकता– अखण्डता के कार्यों पर चर्चा की।

उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महासचिव श्री जोगिन्द्र खट्टर ने सामूहिक दुष्कर्म के अभियुक्तों को नपुंसक बना कर शीघ्र ही **फांसी** दिए जाने की मांग की। शताब्दी समारोह में उपस्थित आर्य नर–नारियों ने दोनों हाथ उठाकर इस प्रस्ताव का समर्थन किया। समारोह में मण्डल प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, पूर्व पार्षद श्री सुदेश भसीन, पार्षद श्री देवराज अरोड़ा, श्री सुनील गुप्ता, विधायक श्री श्याम लाल गर्ग ने भी अपने प्रेरक विचार रखे। **–चन्द्रमोहन आर्य**

आर्य समाज से.–6 भिलाई का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सेक्टर–6, भिलाई का त्रिदिवसीय 53 वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद महायज्ञ 21से 23 दिसम्बर 12 को सम्पन्न हुआ। उत्सव के पूर्व संध्या पर एक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम पुराना नेहरू नगर क्लव में भी आयोजित किया गया था। इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी, पं. नरेशदत्त जी, प्राचार्या डॉ. प्रीति विमर्शनी एवं आचार्य अंशुदेव उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन प्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश द्वारा किया गया। – ***रवि आर्य, मंत्री***

सेवक की आवश्यकता

आर्य समाज मॉडल टाउन, यमुना नगर (हरि.) को सेवक की आवश्यकता है। मासिक वेतन 4000 रुपये। आवास एवं अन्य सुविधाएँ निःशुल्क। विवाहित को प्राथमिकता। आवेदक को पूर्ण शाकाहारी, धूमपान व मदिरा से रहित होना चाहिए। सम्पर्क करें–

0416446305, 09896293393

शोक समाचार श्री सत्यपाल पथिक को पत्नीशोक

आर्य जगत् के विश्व प्रसिद्ध गीतकर, भजनोपदेशक और संगीतकार श्री पं. सत्यपाल पथिक की पत्नी श्रीमती कृष्णावन्तीजी का 23 दिसम्बर 2012 को 66 वर्ष की अवस्था में उनके निवास स्थान 70 ए गोकुलनगर, मजीठरोड, अमृतसर पर निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। पं. पथिक जी को वेद प्रचार के लिए उन्होंने ही गृहस्थ जीवन की व्यस्तताओं से मुक्त किया हुआ था। उनके मन में आर्य समाज, वेद और महर्षि के मिशन के प्रति गहरी तड़प थी। उन्होंने जब तक जिया, आर्य समाज के प्रति समर्णण भावना को लेकर ही जिया। एक आदर्श आर्य परिवार का निर्माण करने में श्रीमती पथिक ने अपना सारा जीवन लगा दिया। किस प्रकार एक आर्य नारी अपने बच्चों को वैदिक संस्कार देकर बच्चों को आर्य संस्कारों से ओतप्रोत करती है, इसका उदाहरण श्रीमती कृष्णावन्तीजी थीं। श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 26 दिसम्बर को आर्य समाज लारेन्स रोड़ के सत्संग हाल में आयोजित किया गया, जिसमें आर्य जगत् के बड़ी संख्या में गणमान्य आर्यजन, सदस्य और कार्यकर्ता उपस्थित थे। उनके निधन से पण्डित जी के परिवार में रिक्तता आ गई है।

श्री आर. एस. शर्मा का निधन

आर्य समाज प्रीत विहार के कोषाध्यक्ष श्री आर. एस. शर्मा जी का 8 जनवरी, 2013 को निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि 9 जनवरी को निगम बोध घाट पर वैदिक विधि–विधान से की गई। वे 72 वर्ष के थे। वे अपने पीछे पत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी व तीन सुपुत्रों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज प्रीत विहार में 11 जनवरी को हुई, जिसमें आर्य समाज के आर्यजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री शर्मा ने 25 वर्षों तक आर्य समाज प्रीत विहार में कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य तो किया ही समाज में चलने वाले निर्बल वर्ग के बच्चों के लिए 'वैदिक शिक्षा केन्द्र' में निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएँ दीं। वे नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् अपना पूरा समय आर्य समाज प्रीत विहार को देते रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

14 जनवरी, 2013 से 20 जनवरी, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17 / 18 जनवरी –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 जनवरी, 2013

गौ हत्यारों और दुष्कर्मियों को फाँसी की सजा की माँग

31 दिसम्बर2012। मेवात क्षेत्र में बढ़ रही गौ हत्या, हिन्दू कन्याओं का अपहरण और दिल्ली में घटी बर्बर दुष्कर्म की घटना पर पिछले दिनों आर्य समाज के प्रमुख व्यक्तियों ने दोषियों के लिए सरकार से फाँसी की सजा की माँग मेवात क्षेत्र के दौरे के दौरान एक सभा में की। इसके साथ हरियाणा में गौ आयोग बनाने की भी पुरजोर माँग हरियाणा सरकार से की गई। इस बात पर बहुत ही रोष व्यक्त किया गया कि मेवात के फिरोजपुर झिरका, पूनाहाना, गुरुकुल भादसक्षेत्र में गुंडागर्दी, चोरी, डकैती–लूटपाट की घटनाएँ निरन्तर बढ़ती ही जा रही हैं। गौ हत्या कानून व नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं । गौ हत्यारों के हौसले इतने बुलन्द हैं कि पुलिस का उन्हें कोई डर नहीं रह गया है। गौ माँस सब्जी की तरह मेवात क्षेत्र में बेचा जा रहा है। इससे हिन्दू जनता में रोष तो है ही मुसलिम युवकों की गुंडागर्दी से डर भी बढ़ गया है। मेवात पहुँचने पर आर्य नेताओं और गौ शाला से सम्बन्धित नेताओं के सम्मुख हिन्दू भाइयों ने उनके ऊपर मुसलिम गुंडों द्वारा ढाए जा रहे जुल्म की कहानी नाम न उजागर करने के अनुरोध पर बताया कि इस क्षेत्र में जीना दुष्कर हो गया है। न तो सरकार हमारी बात सुनती है और न तो प्रशासन में ही कोई सुनवाई हमारी है। इस दौरे और सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, दिल्ली सभा के प्रधान आचार्य राजसिंह जी, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव के प्रधान कन्हैयलाल आर्यजी, आर्य वीरदल हरयाणा के महामंत्री वेदप्रकाश आर्यजी, कान्ता अदलेकाजी, गौवंश प्रकोष्ठ हरियाणा के अध्यक्ष मानीराम मगंला, हरीशचन्द्र जी शास्त्री पलवल, धतीरगांव के सरपंच, आर्य वीरागंनादल दिल्ली की प्रधान सुनीता आर्यजी, ओमप्रकाश जी शर्मा फरीदाबाद व दयानन्द गौशाला मरोडा के अध्यक्ष वेदप्रकाश परमार्थी आदि सहित अनेक आर्य महानुभाव उपस्थित थे– **पद्मचन्द्र आर्य**

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

प्रबन्धक सहायक/कम्प्यूटर आपरेटर की आवश्यकता

योग दर्शन महाविद्यालय, रोजड के लिए एक हिन्दी /अंग्रेजी जानने वाले कर्मचारी की आवश्यकता है जो यहाँ व्यवस्था सहायक/कम्प्यूटर आपरेटर का कार्य कर सके। आवेदक को स्नातक व डीपीडी, इन्टरनेट, टेली, वेबसाइट का ज्ञान आवश्यक है। आयु सीमा 25 वर्ष से 40 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। वेतनमान योग्यतानुसार 5000 से 8000 तक। भोजन, आवास व्यवस्था विद्यालय की ओर से उपलब्ध होगी। युवक यदि विवाहित होगा तो वह परिवार के साथ रोजड गाँव में रह सकता है, उसे आवास भत्ता दिया जा सकता है। आर्य युवक को प्राथमिकता दी जाएगी। सम्पर्क सूत्र

– व्यवस्थापक, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड, डाक. – सागपुर, जिला –साबरकाठा–383307, वायुदूत : 09924227154

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर